दोहा विशेषांक

कविता

(भोजपुरी कविता के पहिल त्रैमासिक)

10

सम्पादक : जगन्नाथ

कविता

(भोजपुरी कविता के पहिल त्रैमासिक)

वर्ष-3 अंक-2 अक्टूबर, 2001

सम्पादक : जगन्नाथ

सह सम्पादक : भगवती प्रसाद द्विवेदी

प्रबन्ध : संजय कुमार

चित्रसज्जा : संगीता सिन्हा

सम्पादकीय सम्पर्क : श्याम भवन, एस॰ पी॰ सिन्हा पथ,
बोरिंग कैनाल रोड, पटना-800 001

प्रकाशक : भोजपुरी साहित्य प्रतिष्ठान
श्याम भवन, एस॰ पी॰ सिन्हा पथ,
बोरिंग कैनाल रोड, पटना-800 001

सहयोग राशि : एह अंक के : 6/- रुपया
वार्षिक : 20/- रुपया
आजीवन : 251/- रुपया

(सहयोग-राशि सम्पादक का नाँव से सम्पादकीय सम्पर्क पर देय)

सम्पादन-संचालन : अवैतनिक-अव्यावसायिक

रचना खातिर एकमात्र रचनाकार जिम्मेवार । भाव, विचार भा कवनो स्तर पर ओह से 'कविता' परिवार के सहमति कतई जरूरी नइखे ।

निहोरा

भोजपुरी कविता के उत्कृष्ट, मानक, सांगोपांग समकालीन सरूप के प्रस्तुति 'कविता' के मंसा बा आ भरोसा बा सिरजनहारन के सर्जनात्मकता के । रउरा अनछपल प्रतिनिधि गीत, गजल, कविता आ लोकराग के रचनन के बेताबी से इंतजार रही 'कविता' के ।

www.bhojpurisahityangan.com

सम्पादक के पन्ना

काया लघु होखे भले, मगर भाव के खान ।
दोहा मुक्तक काव्य के, हउवे छंद प्रधान ।।

तीव्र भाव–अभिव्यंजना, भाषा कसल, प्रवाह ।
पढ़त–सुनत हिय में धसे, मुँह से निकले वाह ।।

चउबिस कल[1] के छंद ई, हउवे अति परसिद्ध ।
केतने कवि अपनाइ के, एह के भइले सिद्ध ।।

तेरह कल के विषम पद, ग्यारह के सम होय ।
सम में तुक के योजना, विषम न तुक के ढोय ।।

विषम चरण के आदि में, जगण न आवे पाइ ।
सगण[2], नगण[3] भा रगण[4] से, अन्त सुफल हो जाइ ।।

त्रिकल गलात्मक[5] से करीं, सम चरणन के अंत ।
दोहा के लघु गात में, भर दीं भाव अनंत ।।

रउवे सभ के देख के, हमरो जागल साध ।
कथनी दोहामय भइल, छमा करीं अपराध ।।

सौगात

अपने के सहयोग ही, 'कविता' के औकात ।
दोहा–केन्द्रित अंक लीं, 'कविता' से सौगात ।।

---

1. मात्रा, 2. ।।ऽ, 3. ।।।, 4. ऽ।ऽ, 5. ऽ।

www.bhojpurisahityangan.com

तर्पण

डॉ. जितराम पाठक के पाँच गो दोहा

जनम : 2 सितम्बर, 1928

निधन : 29 सितम्बर, 1994

भोजपुरी के चर्चित निबन्धकार, कथाकार, आलोचक आ कवि ।

: 1 :

सावन–साध सहेजि के, चढ़ल टिकुलिया चान ।
माखन–मन सपना सटल, गोरिया भइल जवान ।।

: 2 :

मुसुकी के रस–धार में, भींज बहल मन–मीत ।
पोर–पोर में बाँसुरी, कोर–कोर संगीत ।।

: 3 :

फूल हजारी सेज पर, साँवरिया के साध ।
अँकवारी में डूबि के, नेहिया भइल अगाध ।।

: 4 :

झाँवर नाता नेह से, नयना लरकल लोर ।
कवल करेजा में भइल, बिरह–बिथा अँखफोर ।।

: 5 :

उमड़ल बादर प्रेम के, पुरवा बहे सनेस ।
आँजन अँगिया–राह से, पहुँचल बालम देस ।।

⊙

('डॉ॰ जितराम पाठक स्मृति-ग्रंथ' से साभार)

www.bhojpurisahityangan.com

दोहा

• पाण्डेय कपिल

बंसी गूँजे कान में, आँगे कदम फुलाय ।
आँखिन से जमुना बहे, मन-राधा अकुलाय ॥

रस बरिसावे नेह के, जब सावन के मेह ।
भींजे चूनर गाँव के, गह-गह करे सरेह ॥

बूढ़ा-बूढ़ी सोच में, गिनत रहस दिन सेस ।
बीबी-बच्चा साथ ले, बेटा बसे बिदेस ॥

झूठ-साँच के जाँच में, होते रही प्रपंच ।
दल के दलदल में फँसल, जब ले रहिहें पंच ॥

जिनिगी ह विपरीत के, जोड़ल एगो द्वंद ।
जनम-मरन के बीच के, गावल एगो छंद ॥

अपना के बूझल कठिन, दोसरा के आसान ।
जे अपना के बूझ ले, से ही चतुर सुजान ॥

आगे रेते-रेत बा, नइखे कवनो छाँव ।
आँधी बहुते तेज बा, लथराइल बा पाँव ॥

चउरस्ता बहुते मिलल, डेगे-डेगे मोड़ ।
जिनिगी के एह राह में, डिगल न आपन गोड़ ॥

जेकरा जेतने बा मिलल, ओतने चाहे और ।
और-और के दौर के, अन्त न कवनो ठौर ॥

कइलीं जे कुछ हो सकल, खाके सतुआ-नून ।
बाटे रउरा सामने, जे भी नीक-जबून ॥

• हरिकिशोर पाण्डेय

भोजपुरी-संदेस से, उनका आँखी खून ।
हम का जानी ऊ घरे, पहिरेलन पतलून ॥

उनकर समय गुलाब बा, अकवन भइल हमार ।
हम जोही शिवरात के, जंगल बइठ लचार ॥

राउर घर अलका भइल, कुर्सी गइल अकास ।
आज सुदामा के कथा, द्वापर के उपहास ॥

गौरैया कतनो करी, तबो न होई बाज ।
बनी न कबहूँ बाँझ ऊ, अतने राखी लाज ॥

मन बा टी॰ वी॰ हो गइल, चिहुँकल बानी काँप।
अचके चैनल दाब दी, सुगवा होई साँप ॥

आजादी का खेत में, मनवाँ भइल उतान ।
पुअरा पवलन खेतिहर, मुसवा पवलस धान ॥

प्रजातंत्र के मंत्र ई, वशीकरण के तीर ।
देसी पाउच पर छपल, सीता के तस्वीर ॥

लइका माँगे राइफल, बुढ़ऊ माँगस कोक ।
किरिन-भाव गिरते गइल, रात बिकाइल थोक ॥

हर कोई बा द्रौपदी, चीर बचावत हाथ ।
का रउओ दुविधा भइल ? कहीं द्वारिका-नाथ ॥

आजो यमुना बा उहे, चंदा उहे अकास ।
वृंदोवन बाटे उहे, रउवे नइखीं पास ॥

• पाण्डेय सुरेन्द्र

छप्पर से ऊठत धुआँ, पूरा गाँव धुआँय ।
चुप्पी पसरल बा मगर, धप-धप पाँव सुनाय ॥

मोती जस गोली बनल, पेटी जइसन हार ।
कमलनाल बन्दूक जस, अइसन तारनहार ॥

माथे पगड़ी बाँध के, ले हाथे बन्दूक ।
अइसन राजा गाँव के, दिहलस मड़ई फूँक ॥

मुड़कट्टा के थान पर, चढ़ा-चढ़ा के मुंड ।
ठाँय-ठाँय देवा हँसल, गिरल पड़ल बा झुंड ॥

मिले साँच के आँच जो, खिले काँट में फूल ।
डूब गइल मन नाव जस, जइसे पवलस कूल ॥

पुरइन दह लह-लह करे, जइसे लहके आग ।
सूरुज उतरे आँख में, चित में लागल दाग ॥

www.bhojpurisahityangan.com

• अशोक द्विवेदी

जर-जुगाड़ आ पैरवी, के बा मायाजाल ।
पुरस्कार-सम्मान के, मत पूछी अब हाल ॥

धन से धर्म-अधर्म बा, धन बिन कइसन कर्म ।
बड़हन ज्ञानी बा उहे, जे समझे धन-मर्म ॥

पत्थर ईटा पिच सड़क, कतो फेंड़ ना रूख ।
एह नगरी में हमन के, कबो मिटी ना भूख ॥

साजन तहरा गाँव में, कइसन मचल अन्हेर ।
आवे-जाये के डहर, सब दीहल बा घेर ॥

सुघराई के स्वर्ग में, करलूठन के बास ।
बुरा नजर का दीठि से, रूठ गइल मधुमास ॥

बिन कंता घर कामिनी, जोहे पिय के राह ।
बरसे भादो रात भर, दिन कुवार के दाह ।

खिस्सा अपना राज के, मत पूछीं सरकार ।
जेकरा हाथे लट्ठ बा, ऊहे बा मलिकार ॥

मीत मिताई जोग ना, शत्रु शत्रुता जोग ।
जहाँ लहल जेकर उहे, लगा रहल बा भोग ॥

धनबल जनबल राजबल, तीनू के गँठजोड़ ।
ए कबीर तहरो लगे, नइखे एकर तोड़ ॥

महिमा रउरा तंत्र के, मूसो भइल बिलार ।
उड़त कबूतर देखि के, टपकावत बा लार ॥

• मिथिलेश 'गहमरी'

कवनो हाथे फूल बा, कवनो हाथे आग ।
दुनिया रोवे रात-दिन, आपन-आपन भाग ॥

झालर-झूला हो गइल, सब कौड़ी के तीन ।
घर आइल मेहमान के, रहे मोतियाबीन ॥

जेतना बाँटल बनि सके, जग में बाँटऽ नेह ।
माटी होई एक दिन, सोना जइसन देह ॥

आगे बढ़िके जे हरे, दीन-दुखी के पीर ।
होखे कवनो भेस में, ऊहे साँच फकीर ॥

जेकरा मुँह में पुण्य बा, मन में बाटे पाप ।
बोलऽ कइसे ऊ हरी, दुनिया के संताप ॥

अब तोहरा के छोड़ि के, कुछुओ नइखे याद ।
मिटल लोक-परलोक सब, छूटल हर्ष-विषाद ॥

आँगन-आँगन रातभर, सइ-सइ जरे चिराग ।
तबहूँ एक अन्हार के, जग से मिटे न दाग ॥

लोग तमाशा देखि के, लगल मचावे शोर ।
बा बानर के हाथ में, कठपुतरी के डोर ॥

जिनिगी भर चलते रहल, सुख-दुख के संग्राम ।
मन के रामायण अजब, रावण मरे, न राम ॥

ई दुनिया भलहीं करे, लाख जतन 'मिथिलेश' ।
फूल खिले ना प्रीति के, जबले घर में द्वेष ॥

• तैयब हुसैन पीड़ित

लइकन के उतपात से, गइली जब रिसिआय ।
होके खीसी भूत तब, कँपली धरती माय ॥

होखे असम बिहार भा, होखे उत्कल बंग ।
धरती जब-जब चंग अस, मनई कटल पतंग ॥

कुदरत के कोसत कहत, पूर्व जन्म के भोग ।
ढाँकत खलई ऐब सब, आपन-आपन लोग ॥

कफनो बेंचत में जहाँ, काँपत नइखे पाँव ।
आईं, देखीं ना तनी, गाँधीजी के गाँव ॥

पिछला अनुभव साथ जब, भइलीं काहें फेल ?
प्रजातंत्र हउवे बुला, गलती के ही खेल ॥

पूछी नवका आदमी, पढ़-पढ़ के इतिहास ।
कुछ अधिनायक देश के, बाकी काहें दास ??

www.bhojpurisahityangan.com

• भगवती प्रसाद द्विवेदी

पियराइल बेमार दिन, जरत बुताइल साँझ ।
पर लगाइ सपना उड़ल, आस हो गइल बाँझ ॥

बा जिनगी जीवन बिना, जस पानी बिन मीन ।
निपट मवेशी आम जन, बस कउड़ी के तीन ॥

गँवई सामन्ती कड़क, शहर पुलिसिया मार ।
उहाँ-इहाँ तिरशंकु-अस, जिनगी भइल पहाड़ ॥

उहे झपट्टा बाज के, उहे ब्याज पर ब्याज ।
गूँग काल्ह के आस में, बनल अपाहिज आज ॥

आतंकित सउँसे शहर, माथे चढ़ल जुनून ।
घर भा बहरी, का पता, कब हो जाई खून ??

कामधेनु जनता हई, ग्वालन ई सरकार ।
मन माफिक दूहल करे, जब जतना दरकार ॥

बा प्रादेशिक पशु भइँस, करे भइँसिया ऐश ।
मनई कोसे भाग के, हमहूँ रहितीं भैंस ॥

चाह मरल, चिन्ता बढ़ल, नइखे सूझत राह ।
पथराइल जोबन मिलल, जिनगी मिलल सियाह ॥

कउवो अब लागल चले, राजहंस के चाल ।
झोंपड़पट्टी के भला, के अब सुनी सवाल ??

बहुत रचाइल बाँकपन, विरह, मिलन, एहवात ।
अब तऽ दोहा में करऽ, भूख-प्यास के बात ॥

• बरमेश्वर सिंह

सूर लिखी, तुलसी लिखी, चाहे लिखी कबीर ।
मीरा-मरियम जे लिखी, सब में आपन पीर ॥

हवा कहीं, पानी कहीं, अउरी कहीं जमीन ।
हमनी के करनी कही, तीनो भइल मलीन ॥

घर-बाहर के का कही, कतना करी बखान ।
आपस के रिश्ता इहे, बस पाकिट पर ध्यान ॥

प्रेम-नदी हम देखली, बाटे अगम अपार ।
कहीं किनारा ना मिलल, मिलल त बस मझधार॥

प्रेम-नगर के राह पर, थिरकत जाला पाँव ।
होश राखि आगे बढ़ीं, फिसलन ठाँवे-ठाँव ॥

बा मुड़ेर पर बइठि के, कागा बोलत काँव ।
बबुआ के बाबू बुला, आवत बाड़े गाँव ॥

शोषित जन अब का करो, करो त केकर आस ।
पार्टी पर बा छा गइल, अपराधी, ऐय्याश ॥

एगो बानर के इहाँ, ऊँचा बनल मचान ।
'गो-माता' के देश में, भइँस भइल परधान ॥

हँसी-हँसाई छूटिके, ई जिनिगी के सार ।
का जाने कब काल के, चल जाई तलवार ॥

बा दोहा ई बानगी, पढ़ते दी झकझोर ।
अँखगर खातिर बा बहुत, अन्हरन खातिर थोर ॥

• शिवपूजन लाल विद्यार्थी

दिन-पर-दिन ऊपर चढ़त, वैर-घृणा के ग्राफ ।
स्वार्थ-द्वेष के काँट में, अझुराइल इन्साफ ॥

उमड़ल आवत वेग से, महँगाई के बाढ़ ।
हुँफत चलत आतंक के, निरभय छुट्टा साँढ़ ॥

दम तोड़त संवेदना, नैतिकता बेमार ।
रहबर जब रहजन बनल, कवन करी उपचार ॥

पइसा के सब खेल बा, पइसा के सभ यार ।
पइसा बा तऽ माफ बा, करऽ अनर्थ हजार ॥

एह पत्थर के राज में, के अब सुनी तोहार ।
लंठन के पूजा अबो, लाठी के जयकार ॥

देस-प्रेम ऊफर पड़ो, बस कुरसी से प्यार ।
राजनीति अब बन गइल, महज एक व्यापार ॥

www.bhojpurisahityangan.com

• सूर्यदेव पाठक 'पराग'

तन के घट से रिस रहल, पल-छिन जीवन-नीर ।
लोभ-लाभ में जन रमल, जर्जर भइल शरीर ॥

तिनका-तिनका जोड़ के, करे नीड़-निर्माण ।
पंछी तकले बा सजग, रे जाहिल इन्सान ॥

समय-समय के फेर बा, समय-समय के बात ।
समय-चक्र में बा बन्हल, सुख-दुख आ दिन-रात ॥

कबले बदरी में छिपी, सूरज चाहे चान ।
दुर्दिन में होखे भले, ना ओकर पहचान ॥

परिचय के मुँहताज का, जब फूलन में बास ।
गुणग्राही अइहें खुदे, गुणीजनन के पास ॥

चटकी कली गुलाब के, छिटकी मदिर पराग ।
मधुप्रेमी भँवरा उड़त, आई भर अनुराग ॥

सबके जीवन-बाग में, आवे रुचिर वसंत ।
सबके मन मन्मथ मथे, चाहे संत-असंत ॥

हालाहल युग के पचा, बनी विश्व के नाथ ।
साँपन के माला गले, रखी जाह्नवी माथ ॥

• अनन्तदेव पाण्डेय 'अनन्त'

कइसे अब केहू करी, केहू कऽ विसवास ।
अपने जब दूसर भयल, का दोसर कऽ आस ॥

बतियावल आसान हऽ, कठिन कइल कुछ काम ।
बतियावत जिनगी गइल, माया मिलल न राम ॥

गुर गोबर, अस हो गइल, जीयल-मुअल समान ।
काँपत नर, नर देखि के, अइसन भइल जहान ॥

मनवाँ के होते मइल, मइल लगे सन्सार ।
अमिरित तब माहुर लगे, घमवो लगे अन्हार ॥

गीता रामायन पढ़त, अमिरित मिलल बुझाय ।
तबहूँ पढ़ि-पढ़ि जहर में, जिनगी बोरलि जाय ॥

• रिपुञ्जय निशांत

भावुकता के गाँव में, भुला गइल बा छन्द ।
कविता ऊसठ हो गइल, सूख गइल मकरन्द ॥

संकट में बाटे पड़ल, मानवता के गाय ।
दानवता से मुक्ति के, बाटे कवन उपाय ॥

तिनका निर्बल जान के, करीं कबो मत रार ।
पड़ जाई जब आँख में, होई जगत अन्हार ॥

आइल कइसन बा समय, सभे मनावत खैर ।
पहचानल बाटे कठिन, के आपन, के गैर ॥

नैतिकता खोजत फिरे, मिले कहीं ना ठौर ।
अपराधी पैदा करे, ई विकास के दौर ॥

बाँह निराशा के गहे, काहें बारम्बार ।
आशा पर बाटे चलत, जब सारा संसार ॥

मन अथाह में बा पड़ल, लागी कइसे पार ।
भाग्य भरोसे चल रहल, नाव बिना पतवार ॥

सावन से आशा रहे, हरी जगत के ताप ।
फूल-फूल मुरझा गइल, पत्ता करे विलाप ॥

• दयाशंकर तिवारी

मरयादा के पुरुष अब, लउकें नाहीं राम ।
दुवराइल माखन बिना, गोकुल में घनश्याम ॥

सभहीं आजु जनून में, घूमि रहल बेकाम ।
बिगरल घोड़ा भीड़ में, जइसे बिना लगाम ॥

गुन-अवगुन के अब कतो, परख न बाटे आज ।
अचरज लागत देखि के, अइसन सभ्य समाज ॥

वृता से बहरी भइल , सभकर आपन बोझ ।
देखे में केहू कहीं, लउके नाहीं सोझ ॥

ऊपर से ही देखि के, कइसे करी बयान ।
मनई के मन में जहाँ, बइठल बा शैतान ॥

www.bhojpurisahityangan.com

• रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष'

सूख गइल कुँइया-नदी, सूखल हरियर खेत ।
सूखल सागर स्नेह के, पसर गइल बा रेत ॥

चलत-चलत थाकल उमर, मिलल न मन के ठाँव ।
चटक रूप के धूप में, दूलम शीतल छाँव ॥

आन्हीं अइसन बा बहल, उधियाइल इन्सान ।
ओठन पर बाटे भजन, ताखा पर ईमान ॥

आन्हीं भा तूफान ना, ना भँवरन के दाव ।
पानी ना जहवाँ रहे, डूबल तहँवे नाव ॥

पछवइया हहरत चलत, थथमत नइखे पाँव ।
फागुन आइल बाग में, लहकत बाटे गाँव ॥

मौसम में आइल इहाँ, कतना ले बदलाव ।
दर्द रहल एके निहन, नया मिलल बस घाव ॥

ओठन पर सूखा रहल, आँखिन में बरसात ।
जीवन के हर मोड़ पर, मौसम के उत्पात ॥

बरिसन से 'पीयूष' ई, ना अकास फरिछात ।
सूरज बा निकलल तबो, बदरी कहाँ बिलात ??

• आनन्द सन्धिदूत

चिड़ा कहे चिड़िया हँसे, गइल अन्हार बिलाय ।
तब जाकर के जगत में, रथ सूरज के आय ॥

केरा तरु आगे बढ़ल, कहलस बेर-बबूर ।
बहुत पाप गइले पड़े, जनमभूमि से दूर ॥

होत भिखारी सेठ बा, सेठ होत मजदूर ।
लोकतंत्र में दान के, नया-नया दस्तूर ॥

आनन्द, अँगुरी बल बिना, भइल न एको काम ।
बड़ दिमाग हाथी भइल, अँगुरी बिना गुलाम ॥

केहू दुर्मुख तीत बा, केहू मधुर अतीव ।
आनन्द, एह संसार में, तरह-तरह के जीव ॥

भय से अनुशासन बने, भय से होत न प्रीत ।
गइल बिभीसन छोड़ के, रावण संग सभीत ॥

आपन बल-साहस तथा, चिन्तन कथा लिखाय ।
करत तेग की नौकरी, बधिक न वीर कहाय ॥

लीं, बरखा रितु आ गइल, बरिसे दूनो नैन ।
भेदभाव जुग में कहाँ, बिन बादर के चैन ॥

• अक्षय कुमार पाण्डेय

धूल, धुआँ, ध्वनि, धुंध से, मौसम कऽ अनुबंध ।
टूट गइल ऐना नियर, हरियाली कऽ छंद ॥

जातिवाद कऽ प्रेत से, भइल समय कऽ साथ ।
बायाँ के काटे लगल, आपन दायाँ हाथ ॥

शहर कि जंगल ईट कऽ, मुर्दा जहवाँ भाव ।
सब केहू जीये जहाँ, आपन-आपन घाव ॥

टूटल छंद सनेह कऽ, पीड़ा कऽ परतीत ।
समय बेसुरा हो गइल, उगे न मन में गीत ॥

खेत, बगइचा आ नदी, गड़ही, पोखर, ताल ।
काहें मुर्दा हो गइल, पूछे गाँव सवाल ॥

• कुमार विरल

मँगनी में सउदा भइल, बंधक पड़ल इमान ।
प्रेम-पहाड़ा के पढ़ो, दुनिया बा बेइमान ॥

केकरा से रूसा-फुली, के बा पूछनिहार ।
हीत-मीत सपना भइल, जिनिगी लागत भार ॥

जिनिगी में के आ गइल, आन्ही उठल हहास ।
सब सपना छितरा गइल, जइसे रुआ कपास ॥

जिनिगी भर खेवत रहीं, टूटल झाँझर नाव ।
हमरा नाहीं मिल सकल, सपना के ऊ गाँव ॥

छकि-छकि पिअली ना तबो, मिटल हिया के प्यास ।
अचके में बइठल मिलल, दुअरा पर संन्यास ॥

www.bhojpurisahityangan.com

● पी॰ चन्द्रविनोद

मन के बात मने रहल, ईहे सब से नीक ।
के दुश्मन, के हीत बा, एकर नइखे ठीक ॥

लइका लम्पट हो गइल, बड़ा खुशी के बात ।
अबकी भइल चुनाव जो, कर दी सबके मात ॥

उनकर अइसन हाथ बा, बाँटी नगद करोड़ ।
बस मोका के ताक बा, गरदन कमल मरोड़ ॥

दलित दलानी में रही, दलदल में सब लोग ।
दलहन दल में बाँट के, राजा दिहले रोग ॥

कबिरा ठाढ़ बजार में, सबके लेले साथ ।
लोई बड़ सलहन्त से, लीहें चिपरी पाथ ॥

फूलन के कुछ काँट जब, गड़ल मुलायम गात ।
छटकावल रस्ता रहे, के बूझेला बात ॥

दोष मढ़ल भर रह गइल, संसद के अब काम ।
जे चिल्लाई जोर से, होई ओकर नाम ॥

सहली बहुत सहा गइल, अब ना कहल सहात ।
कइसे कह दी बात अब, जे ना सहलो जात ॥

● तंग इनायतपुरी

इहाँ बिरप्पन शहर में, केतना घूमे रोज ।
काहें जंगल में चचा, एकेगो के खोज ॥

चौराहा पर घाम में, गाँधी, भगत, सुभाष ।
मंत्रीजी के कार में, ए. सी. देख चिहास ॥

राजनीति के धनुष से, कवन चलावे तीर ।
इहाँ दलित-साहित्य से, घायल मीर, कबीर ॥

कबिरा खड़ा बजार में, बेंचे आपन नाम ।
तुलसी जरदा बेंच के, आज चलावे काम ॥

कहीं विदेशी कम्पनी, कहीं विदेशी माल ।
कहीं विदेशी लीडरी, रहि-रहि ठोके ताल ॥

पटना में जूता चले, दिल्ली में फरमान ।
ए॰ के॰ छप्पन गाँव में, आपन देश महान ॥

राजनीति में बायबिल, गीता, ग्रंथ, कुरान ।
मन्दिर-मस्जिद-चर्च में, सउँसे हिन्दुस्तान ॥

राजहंस दाना चुने, मोती गटके काग ।
लोकतंत्र के गाँव में, आपन-आपन भाग ॥

● रघुनाथ प्रसाद विकल

महिमा-मंडित हो रहल, हिंसा आज तमाम ।
रहे काल्ह तक खास जे, आज भइल ऊ आम ॥

आपन दीपक खुद बनऽ, खुदे बनावऽ राह ।
केहू के, संसार में, ना पइबऽ ददखाह ॥

छत पर बइठल लोग सब, पानी चारू ओर ।
बाकिर फिल्मी गीत के, रुकल न अबतक शोर ॥

मेघ झमाझम झर रहल, पानी भइल डुबाँव ।
लड़िकन के बूते बनल, बाँस जोड़ के नाव ॥

दुरजन के पहचान ई, चले अकड़ के साथ ।
भले हाथ तू जोड़ दऽ, ऊ न झुकाई माथ ॥

● शारदानन्द प्रसाद

करम अनैतिक जे करत, बाटे फरत-फुलात ।
हरे लगे ना फिटकिरी, बा कुबेर हो जात ॥

मंत्री करत एलान बा, भाँजि-भाँजि के हाथ ।
जे चाहे झोला भरे, आवे हमरा साथ ॥

ग्रांट मिलल बा देख के, अफसर करे एलान ।
पहिले हमके पूजि लऽ, आवऽ काल्ह-बिहान ॥

आछा दिन पाछा गइल, ना कइले दरबार ।
अब पछता के का करस, मंत्री गइलें हार ॥

झूठ बराबर तप कहाँ, साँच बराबर पाप ।
जेकरा दिल में झूठ बा, सेकर बा परताप ॥

www.bhojpurisahityangan.com

• शम्भुशरण

भइया, एह संसार में, कबो न बोली तीत ।
बनल बात बिगड़ी तुरत, दुस्मन होई मीत ॥

बेमतलब के मोल ली, जे जिनिगी में रार ।
ओकरा तऽ मिलबे करी, डेग-डेग पर हार ॥

गाल फुलउल छोड़ के, करी प्रेम के बात ।
कतना दिन करते रहब, चुपके-चुपके घात ॥

अतराइल बाड़ऽ बहुत, बहुते गरब-गरूर ।
एके धक्का काल के, कर दी चकनाचूर ॥

कविता देखी प्रेम से, दीही उचित सलाह ।
कवि निज के केवट कही, रउवा रहब मलाह ॥

पढ़ली-लिखली ना कछू, बनली तुलसीदास ।
विग्रह रउवा मूल में, रउवे द्वन्द समास ॥

देह-देह धवली बहुत, भइली आज विदेह ।
सबसे बंधन टूटते, झरे आँख से नेह ॥

नेता सब दिल्ली बसल, चले स्वार्थ के दाँव ।
देखेवाला के बचल, उजर रहल सब गाँव ॥

• ब्रजभूषण मिश्र

जे सिरिजल, आ जे पढ़ल, सबका पड़ल पसंद ।
गागर में सागर भरल, अइसन दोहा छंद ॥

आह सुनाई ना पड़े, दिखे न नयनन नीर ।
दोहा में बा भर गइल, कवि का मन के पीर ॥

मसला जनहित के फँसल, राजनीति के दाँव ।
संसद के आवाज बा, जस कउआ के काँव ॥

आजादी कइसन मिलल, हाल भइल बदहाल ।
समझ न पावल आम जन, राजनीति के चाल ॥

चीज-बतुस औरत भइल, जेपर लागे दाव ।
आन्हर बा धृतराष्ट्र जब, कइसे करी बचाव ॥

लूगा लूटे लोग सब, द्रुपद-सुता के आज ।
हारल किसुन लचार बा, कइसे बाँची लाज ॥

• सतीश प्रसाद सिन्हा

जात-पाँत के नाम पर, मत बाँटी संसार ।
बाँटि के मन बा अगर, बाँटी आपन प्यार ॥

नाता-रिश्ता टूट के, होता चकनाचूर ।
नियरे बइठल लोग अब, लागत बाड़े दूर ॥

सब का आगे हरसठे, मत फइलाई हाथ ।
आदर-मान समाज में, जाई एके साथ ॥

लालच तिलक-दहेज के, लेता कतना जान ।
दया-धरम के देश में, कइसन बनल विधान ॥

अपनापन ना मिल सकी, ना मिल पाई प्यार ।
जब ले खोली लोग ना, दिल के बंद दुआर ॥

सगरो पसरल जात बा, आतंकिन के जाल ।
कइसे बाँची देश अब, बाटे खड़ा सवाल ॥

नइखे जागत लोग में, दया-नेह के भाव ।
एही से संसार में, जाता बढ़ल तनाव ॥

गाँव छोड़ के शहर में, गइलन खोजे काम ।
माथा लेले टोकरी, बेंचत बाड़े आम ॥

• हीरालाल 'हीरा'

कहवाँ कतहूँ होत बा, आजु न्याय के जीत ।
दुर्जन मौज मना रहल, सज्जन बा भयभीत ॥

ढंग भुलइले रहनुमा, बदलल इनकर सोच ।
चाहत बाड़े देस के, कइसे लीही नोच ॥

पीछे मुड़ि के देखि ली, बीतल साल पचास ।
नैतिकता गड़हा गिरल, दुराचार आकाश ॥

न्यायालय में होत बा, न्याय रोज नीलाम ।
निर्धन जिन्दा आस में, एक भरोसा राम ॥

जगत-गुरू बा पढ़ि रहल, चेला बनि के पाठ ।
आँख मूँदि अपना रहल, पच्छिमवाला ठाट ॥

www.bhojpurisahityangan.com

• श्रीराम सिंह 'उदय'

सज्जन के अब काम का ? गुंडन के बा राज ।
हंसन के ना पूछ बा, बगुलन के सिर ताज ॥

जे घोटालाबाज बा, जे बा छली, लबार ।
उहे बनल नेता इहाँ, ओकरे बा सत्कार ॥

सभके भोजन देत बा, सहिके कष्ट अपार ।
नंगे-भूखे बा रहत, ऊ किसान मन मार ॥

आपन राह बनाइ के, हिम्मत भरि के जाय ।
मंजिल ओकरे पाँव के, चूमेले हुलसाय ॥

तन-मन-धन से जे करे, परहित के शुभ काम ।
ओकरे गुन गावे सभे, अमर रहेला नाम ॥

सीमा के जे पहरुवा, ओकर जयजयकार ।
सीस झुके सभ के उहाँ, जहाँ शहीद-मजार ॥

छोटहन दोहा में छिपल, बड़हन भाव-प्रवाह ।
अणु के भरल प्रचण्ड बल, ऊर्जा, तेज, उछाह ॥

• सविता सौरभ

माया-तृष्णा ना मरल, देह गइल कुम्हिलाय ।
मउअत आवत देखि के, पागल मन अकुलाय ॥

चिन्ता जबले ना घटी, रोग न छोड़ी साथ ।
भइल कठिन उपचार बा, बैद्य पकड़ले माथ ॥

जे परहित का काम के, बदला ले ना दाम ।
मरलो पर ओकर सभे, लेला हरदम नाम ॥

बात छिपा के जनि रखीं, खुलिये जाई पोल ।
जाइब कवना राह से, ई दुनियाँ बा गोल ॥

जे जिनिगी बा जी रहल, सुख-दुख में समभाव ।
ओकरा के न सता सकी, कवनो कबो अभाव ॥

समय मिलावट के भइल, एही के बाजार ।
पहिचानल मुश्किल भइल, लोगन के व्यवहार ॥

• अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे'

पढ़ल-लिखल नोकर भइल, बिना पढ़ल सरदार ।
अइसन घर के का कहीं, दइब लगइहें पार ॥

कउआ के बारात में, बनल बजनिया हंस ।
युग अइसन अब आ गइल, पूजल जाता कंस ॥

बा बइठल बारूद के, ढेरी पर संसार ।
चेती ना मनई अगर, होई बंटाधार ॥

नैतिकता के आड़ में, करऽ अनैतिक काम ।
छूट मिलल बा लूट के, खूब बटोरऽ दाम ॥

बात साँच बा, साँच के, ना लागेला आँच ।
बाकिर, सगरी झूठ अब, होइ गइल बा साँच ॥

कब का होई, का पता, सभ बिधना के हाथ ।
मिल-जुल के काटत चलऽ, जिनिगी सभके साथ ॥

• शंभुनाथ उपाध्याय

हर पाटी में चोर के, आजु-काल्हि भरमार ।
घुरहू जो ना चेतवऽ, होई बंटाधार ॥

सत्य-अहिंसा-प्रेम के, के पुछवइया आज ।
बिना बयालिस क्रान्ति के, मिलित न आपन राज ॥

जे जहवें बा स्वार्थ में, लूटि रहल बा देश ।
हयाप्रूफ सब हो गइल, बदलि गइल परिवेश ॥

अतना खातिर जनि करऽ, बना-बना मेहमान ।
दूध पियवले साँप के, ना होई कल्यान ॥

विद्यालय का नाँव पर, एगो छोटहन बाग ।
बरखा में भा घाम में, लरिका जाले भाग ॥

चुणी सधले सिंह परल, काटे चलल सियार ।
पुरुखा पीटे स्वर्ग में, आपन देखि कपार ॥

www.bhojpurisahityangan.com

एह अंक के खास कवि : कृष्णानन्द कृष्ण

भोजपुरी के सजग कवि

नागेन्द्र प्रसाद सिंह

भोजपुरी-हिन्दी में सामाजिक सरोकार, आधुनिक विसंगतियन से उपजल भयावह यथार्थ के कहानी, आधुनिक भाव-बोध के साथे गँवई संस्कार के गीत-कविता, समसामयिक संवेदना आ अर्थबोध से भरल गजल तथा रचनात्मक समीक्षा लिखेवाला कृष्णानन्द कृष्ण के इहाँ पचास गो दोहा प्रस्तुत बा ।

एह दोहन में व्यक्ति के स्वभाव, ओकर सुख-दुख, प्रेम, विरह-वियोग, मजबूरी, अधिकार, शोषण-उत्पीड़न अपना पूर्ण अर्थवत्ता के साथे अभिव्यक्त भइल बा । जवना गँवई आ नगरीय समाज तथा संस्कृति में आज आम आदमी रह रहल बा, ओह समाज आ संस्कृति में व्याप्त विसंगतियन के एह दोहन में पकड़े के प्रयास सफलतापूर्वक कइल गइल बा । भारतीय राजनीति, जनतंत्र, विकास आ एह सब से सटल बौद्धिक चिन्तो के प्रति कवि उदासीन नइखन रहल ।

लोग मतलबी, स्वार्थी आ विश्वासघाती हो गइल बा । अइसन स्थिति खातिर आम आदमी जिम्मेवार कम बा, अधिका जिम्मेवार बा पूँजीवादी व्यवस्था के भीतर विकसित सामाजिक चेतना, जवना के प्रभाव समूचा समाज में विष भर रहल बा । लोग बनले के पूछता एह घरी । कुछ दोहन के बानगी देखीं— **'जेके साट करेज से, रखलीं अपना पास । उहे घात अइसन करी, होत कहाँ विसवास'/'अर्थहीन बा हो गइल रिश्ता-नाता, मीत । पूछे बनला के सभे, दुनियाँ के ई रीत ।'**

सामाजिक परिवर्तन के एह संक्रांति काल में सामान्य जन के धकिया के दरकिनार कर दिहल जाता— **'धकिया के अब हंस के, बकुला बनल महंथ । कउवा गावे आरती, आ बाँचे सदग्रंथ ।।'**

पूँजीवादी अर्थ-व्यवस्था का रास्ता पकड़ला के वजह से सामाजिक असमानता बढ़ते जा रहल बा, जवना के परिणामस्वरूप रोटी के आकार घटत जा रहल बा । नेता, अफसर, मंत्री मालामाल होखे लागल बाड़न आ जनता के स्थिति ओह लोग के दुआर के सूखल वंदनवार-अस होत जा रहल बा । एह स्थिति के सटीक चित्रण एह दोहन में भइल बा— **'रोज-रोज घटते गइल रोटी के आकार/नेता मउज मना रहल, लोकतंत्र बीमार ।' 'राजा राजकुमार सब, बा उनकर परिवार/जनता उनका द्वार के, सूखल वंदनवार ।।'**

भारत के 80 प्रतिशत आबादी गाँवन में बसल बा । आजादी के 54 बरिस बादो गाँव के विकास के गति बहुत मंद बा, जेह कारण गाँव नरक के बजबजात कुंड-अस हो गइल बाड़ सन काहें कि अविकसित ग्रामीण व्यवस्था आ अपर्याप्त कृषि-संसाधन-विकास के कारण उहाँ के अधिकांश युवा शक्ति शहर का ओर पलायन कर चुकल बा । एगो बानगी— **'गाँव भइल जब से शहर, परती परल सिवान ।'**

www.bhojpurisahityangan.com

पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के तहत उदारीकरण, भूमंडलीकरण आ विदेशी पूँजी के आक्रामक आयात का कारण राष्ट्रीय उद्योग-धंधा एक का बाद एक बंद हो रहल बा । रोजगार के अवसर घट के 'मृग-जल के भरम' उत्पन्न क रहल बा । एह अभाव, बेरोजगारी आ प्रतियोगिता के दौड़ में आदमी अंधा सुरंग का ओर बढ़ रहल बा । नैतिकता के नितांत अभाव हो गइल बा । केहू एह स्थिति के विरोध करे के स्थिति में अपना के नइखे पावत । सभे चुप बा । एगो उदाहरण— **'लूट-डकैती, अपहरण, आज बनल उद्योग/आजादी के साथ में, नेग मिलल ई रोग ।'**

आजादी मिलला का बाद जवन सुख-शांति आम आदमी के मिलल चाहत रहे, ऊ कुछ लोगन के गमला में अँटक के रह गइल बा । अइसना विषम परिस्थिति में भारतीय संविधान तक के धज्जी उड़ावल जाता । भारत के गैरजिम्मेवार युवा-वर्ग आ स्वार्थ-लोलुप भ्रष्ट नेतृत्व-वर्ग के मानसिकता के सटीक चित्रण कृष्णानन्द के दोहन में भइल बा—

'संविधान रोवत इहाँ, जनादेश सिरमौर / बिरहा गावत सेन्हि पर, चोर, कवन ई दौर ।' माल गइल महराज के, मिरजा खेलस फाग / भरल दुपहरी बीच में गावस भैरव राग ।' अपसंस्कृति के दबाव से अन्धावर्ग ओह औरत के, जवन त्याग-ममता के मूर्तिमयी रूप होले, सरे आम नंगा होके लुटात चुपचाप देख रहल बा । **'गली-गली हर मोड़ पर, हरत दुशासन चीर । कृष्ण बनल बेवस इहाँ बइठ बहावत नीर ।'**

जब आम आदमी, समाज आ देश सामाजिक आ सांस्कृतिक संकट का चक्रव्यूह में फँसल रहेला, त बुद्धिजीवी के प्रकृति का शरण में जाये का अलावे कवनो उपाय ना रहे । कृष्णानन्द कृष्ण भी आनन्द का खोज में प्रकृति के नैसर्गिक रूप का ओर आँख उठावत बाड़न, त पावत बाड़न कि सउँसे वातावरण एगो अजबे आनन्द में डूबल बा । प्रकृति-प्रेयसी के रूप अदभुत बा— **'मधु मातल सहकल हवा, महकल-महकल भोर । बउराइल फागुन गजब, गली-गली में शोर ।'** 'पोर-पोर फूले कदम, तन-मन भइल पलास । **आग लगा कइसन गइल, ई फागुनी बतास ।'** प्रेयसी के ई रूप देख के आदमी के चित्त चंचल हो उठेला, ऊ आनन्द विभोर होके अपना के प्रकृति-प्रेयसी के गुलाबी देह-गंध में डूब-डूब जाला — **'मस्त गुलाबी मदभरल, फागुन के ई रूप । चंचल मन ना थिर रहे, निरख चंपई रूप ।'**

जब आदमी जिनगी के जंजाल से उजबुजाला, त ईश्वर का शरण में जाये के अलावा ओकरा अउर कवनो उपाय ना सूझे । ओकर इहे समर्पण ओकरा के सामान्य से विशिष्ट बनावेला — **"जिनगी रखल हमार बा, रेहन प्रभु के पास । रहल कबो ना मुक्ति के इचिको हमरा आस ।।"** कुल मिला के कृष्णानन्द कृष्ण सजग कवि आ भारतीय संस्कृति के निष्णात साधक बाड़न ।

दोहा के परम्परागत छंद-शिल्प के निर्वाह कृष्णानन्द कृष्ण बड़ा निपुणता से कइले बाड़न । उनका एह पचास दोहन में अलंकारन के भरमार बा जइसे वृत्यानुप्रास, वीप्सा, पूर्णोपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, मानवीकरण आदि । पूर्णोपमा के एगो उदाहरण त आनंदित क देत बा— **'औरत धरती अस सहे, सुख-दुख सब अपमान ।'**

अइसे कृष्णानन्द के दोहा उक्तिवैचित्र्य से भी लैस बाड़ सन, बाकिर ई त जतना अधिक होई, ओतने बात बनी । एह दिसाई कवि के सतत सजगता अपेक्षित बा ।

हमरा विश्वास बा कि इनकर 'भोजपुरी सतसई' कबो-ना-कबो प्रकाशित होई आ भोजपुरी आधुनिक काव्य के प्रतिमान बनी ।

www.bhojpurisahityangan.com

कृष्णानन्द 'कृष्ण' के दोहा

'बदल गइल कइसन हवा, गाँव-नगर के आज ।
लोग भइल सब मतलबी, आँखिन में ना लाज ॥

नस-नस में विष बा भरल, जात-पात के, यार ।
दानवता के सामने, मानवता लाचार ॥

राग-द्वेष के बा गरम, यार, जहाँ बाजार ।
नेह-छोह कइसे मिलो, जहाँ जाति आधार ॥

जब से छूटल गाँव-घर, पाथर भइल करेज ।
चैन गइल बा नैन के, काँट भइल बा सेज ॥

जे हमरा मन में रहे, कह देलीं हम साफ ।
जो जबून लागे कहल, भाई करिहऽ माफ ॥

धकिया के अब हंस के, बकुला बनल महंथ ।
कउवा गावे आरती, आ बाँचे सद्ग्रंथ ॥

चाल समय के देख के, चलीं समय के संग ।
मुफुते में जिनिगी कहीं, हो न जाइ बदरंग ॥

लूट, डकइती, अपहरण, आज बनल उद्योग ।
आजादी के साथ में, नेग मिलल ई रोग ॥

राजा, राजकुमार सब, बा उनुकर परिवार ।
जनता उनका द्वार के, सूखल बंदनवार ॥

गली-गली में छा गइल, बा बकुलन के झुंड ।
गाँव भइल बा नरक के, बजबजात अब कुंड ॥

राजनीति के गाँव में, पसरल जबसे जाल ।
मानवता के लोप से, लोग भइल बेहाल ॥

देख दुआरी पर रखल, अच्छत, चंदन, धूप ।
खाड़ हो गइल सामने, बा धनिया के रूप ॥

www.bhojpurisahityangan.com

गाँव भइल जबसे शहर, परती परल सिवान ।
लोग मिरिगजल भरम में, आज दे रहल जान ॥

रोज-रोज घटते गइल, रोटी के आकार ।
नेता मउज मना रहल, लोकतंत्र बीमार ॥

आजादी कइसन मिलल, कइसन भइल सुराज ।
जनता गौरैया बनल, नेता बनलें बाज ॥

भाग्य-विधाता देस के, जनता बा बेहाल ।
नेता, अफसर, मंतिरी, भइले माला-माल ॥

पोर-पोर फूले कदम, तन-मन भइल पलास ।
आग लगा कइसन गइल, ई फागुनी बतास ॥

मस्त गुलाबी मद-भरल, फागुन के ई धूप ।
चंचल मन ना थिर रहे, निरख चंपई रूप ॥

फागुन खड़ा दुआर पर, ले अबीर के थाल ।
आँखिन-आँखिन में करे, धनिया मूक सवाल ॥

जे दुसमन बा अकिल के, मूरख निपट गँवार ।
बिना बात बुझले कहे, 'कृष्ण' जगत में, यार ॥

आज अँटक के रह गइल, गमला में मधुमास ।
चहल-पहल का बीच में, काहें 'कृष्ण' उदास ॥

आवत आज सरेह से, पायल के झनकार ।
प्रेम-पहाड़ा लिख गइल, सुन गोरी के यार ॥

औरत धरती अस सहे, सुख-दुख, सब अपमान ।
तबहूँ दुनियाँ ना करे, औरत के सम्मान ॥

औरत ममता-त्याग के, होले अद्भुत रूप ।
कबो बने शीतल हवा, कबो फागुनी धूप ॥

मधुमातल सहकल हवा, महकल-महकल भोर ।
बउराइल फागुन गजब, गली-गली में शोर ॥

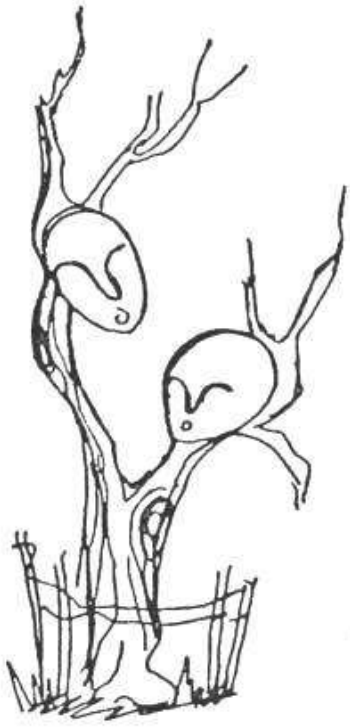

www.bhojpurisahityangan.com

हँसी, ठिठोली, कहकहा, बीतल दिन के बात ।
भय, पीड़ा, दहसत, घुटन, आज मिलल सौगात ।।

जिनगी रखल हमार बा, रेहन प्रभु के पास ।
रहल कबो ना मुक्ति के, इचिको हमरा आस ।।

तहरा से अलगे कहाँ, बा हमार पहचान ।
प्रान रही तन से अलग, कइसे लीहीं मान ।।

माल गइल महराज के, मिरजा खेलस फाग ।
भरल दुपहरी बीच में, गावस भैरव राग ।।

तृप्त भइल ना मन कबो, सुन बंसी के तान ।
कतनो दोहा में करस, उनकर 'कृष्ण' बखान ।।

बैर-भाव अइसन बढ़ल, जइसे वन मे आग ।
नेह पराया हो गइल, फूटल आपन भाग ।।

रूप शरद के चाँदनी, देख चिहाइल लोग ।
मन चंचल तिरपित भइल, कइसन माया-योग ।।

जे के साट करेज से, रखलीं अपना पास ।
उहे घात अइसन करी, होत कहाँ विसवास ।।

सन्नाटा पसरल इहाँ, सून भइल चौपाल ।
छाया में आतंक के, लोग भइल पैमाल ।।

कुइआँ के सूना जगत, घिंड़सिर परल उदास ।
आधुनिका घर-घर बइठि, खूब करे उपहास ।।

बहुत इसारा में भइल, घात अउर प्रतिघात ।
कहिया लेऽ अइसे चली, साफ करीं ना बात ।।

रंग जमा फागुन गइल, आइल चइत उदास ।
अलसाइल मौसम अजब, गोरी लेत उसाँस ।।

बाग-बगइचा सज गइल, कर सोरह सिंगार ।
डोली ले के आज बा, फागुन खड़ा दुआर ।।

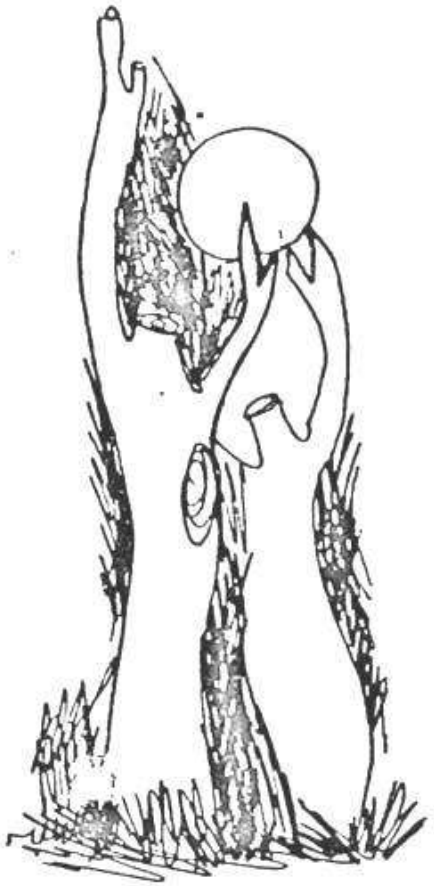

www.bhojpurisahityangan.com

तन-मन कंचन अस भइल, नैन भइल रतनार ।
गंध गुलाबी देह के, महके आँगन-द्वार ।।

हर जीवन के आस बा, अउर फार बिसवास ।
बीज बनल बा लालसा, अउर फसल मधुमास ।।

लकड़ी के कुरसी अजब, जादू कइलस आज ।
गौरैया ले बन गइल, कइसन शातिर बाज ।।

अर्थहीन बा हो गइल, रिश्ता-नाता, मीत ।
पूछे बनला के सभे, दुनियाँ के ई रीत ।।

साँच कचहरी में भइल, सरेआम नीलाम ।
घर-घर झूठ पुजात बा, देखीं आठो याम ।।

गली-गली हर मोड़ पर, हरत दुसासन चीर ।
कृष्ण बनल बेवस इहाँ, बइठि बहावत नीर ।।

झरत देख आकास के, हियरा गइल पसीज ।
परल धरा के कोख में, हुलसे पल-पल बीज ।।

उतरल रात दुआर पर, चुपके-चुपके रात ।
थाकल दिन सूतल रहे, भइल न मन के बात ।।

गंगा-जमुना-जल इहाँ, बाटे भइल किदोर ।
राज कालिया के भइल, सिसकत नंदकिशोर ।।

भरल कटोरा प्रेम के, ढरकल अँगना-द्वार ।
ताजमहल अइसन खड़ा, ऊ जमुना के पार ।।

केहू खा-खा के मरे, केहू मरे उपास ।
'भारत देस महान बा', उक्ति भइल उपहास ।।

संविधान रोवत इहाँ, जनादेश सिरमौर ।
बिरहा गावत सेन्हि पर, चोर, कवन ई दौर ??

⊙

www.bhojpurisahityangan.com

• जगन्नाथ

का से का बा हो गइल, यारे, आपन गाँव ।
हदसि जात मन-प्रान बा, जहाँ धरे में पाँव ॥

नया-नया होता खड़ा, अनगिन रोज सवाल ।
मगर जवाबन के इहाँ, पसरल घोर अकाल ॥

टूट गइल सम्बन्ध सब, बंद भइल संवाद ।
तबहूँ काहें दो अबो, गाँव परत बा याद ॥

फेरु धरे के बा अगर, अपने का अवतार ।
हे प्रभु ! डूबत मुल्क के, लीहीं अबो उबार ॥

तन का भलहीं बा मिलल, मन के मिलल न ठाँव ।
एने तानत बा शहर, ओने तानत गाँव ॥

केहू के बाटे कहाँ, असली रूप लखार ।
के दुसमन, के मीत बा, कहल बड़ा दुश्वार ॥

लूटपाट आ अपहरण, हत्या, नरसंहार ।
जनतांत्रिक माहौल के भइल खास व्यापार ॥

◉

• मनोज कुमार सिंह 'भावुक'

जहवाँ हम रोपले रहीं, किसिम-किसिम के फूल ।
समय उगा के चल गइल, उहँवे आज बबूल ॥

'भावुक' एंगो घर बदे, छछनत रहल परान ।
बाकिर, कहवाँ घर बनल, भलहीं बनल मकान ॥

साँस-साँस में भूख बा, साँस-साँस में प्यास ।
तब कइसे ई मन भरी, जबले बाटे साँस ॥

'भावुक' हमरा पास बा, बावन बिगहा खेत ।
बाकिर कवना काम के, जब सब रेते-रेत ॥

अरमानन के भीड़ बा, बाकिर दिल बा छोट ।
एही से अक्सर इहाँ, दिल में लगे कचोट ॥

चलते-चलते राह में, आवे अइसन मोड़ ।
जहवाँ आपन साँस भी, देला संगत छोड़ ॥

हमरा ई का हो गइल, 'भावुक' तहरा जात ।
तहरे रट, तहरे फिकिर, तहरे खाली बात ॥

◉

'कविता' - प्रतिनिधि

डुमराँव	: **मुफ़लिस** (चौधरी टोला)
बक्सर	: **रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष'** (शंकर भवन, सिविल लाइन्स)
आरा	: **जितेन्द्र कुमार** (मदनजी का हाता, पकड़ी चौक)
मोतिहारी	: **कुमार अरुण** (कार्यालय, जिला सहकारिता पदाधिकारी)
सिवान	: **डॉ. तैयब हुसैन 'पीड़ित'** (जेड॰ ए॰ इस्लामिया कॉलेज)
तिनसुकिया	: **ललन प्रसाद पाण्डेय** (बरडूबी बाजार, पो॰ हुगरीजान)
मुजफ्फरपुर	: **डॉ. ब्रजभूषण मिश्र** (काँटी थर्मल पावर स्टेशन)

'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के जून, जुलाई आ अगस्त के संयुक्त अंक **दोहा विशेषांक** के रूप में शीघ्र प्रकाश्य ।

रचना, पोस्ट बॉक्स – 115, पटना– 800 001 के पता पर तुरंत भेजीं ।

www.bhojpurisahityangan.com

सहयोगी रचनाकार

- अक्षय कुमार पाण्डेय/9, रेवतीपुर (रंजीत पाण्डेय), गाजीपुर-232328
- अनन्तदेव पाण्डेय 'अनन्त'/8, स्टीमर घाट, गाजीपुर सिटी- 233001
- अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे'/12, ग्रा॰ पो॰ सागरपाली, जिला-बलिया (उ॰ प्र॰)
- डॉ. अशोक द्विवेदी/6, 47 टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया (उ॰ प्र॰)
- आनन्द सन्धिदूत/9, इलाहाबाद बैंक, रिजनल आफिस, जंगी रोड, मिर्जापुर- 231001 (उ॰ प्र॰)
- कुमार विरल/9, स्कूल रोड, माड़ीपुर, मुजफ्फरपुर
- कृष्णानन्द 'कृष्ण'/15, पथ-8 बी, अशोक नगर, पटना-800020
- जगन्नाथ/ कवर पृष्ठ-3, ललिता होटल के पीछे, बोरिंग कैनाल रोड, पटना-800001
- तंग इनायतपुरी/10, रजिस्ट्री कचहरी रोड, कागजी मुहल्ला, सीवान-841226
- डॉ. तैयब हुसैन 'पीड़ित'/6, हिन्दी विभाग, जेड॰ ए॰ इस्लामिया कॉलेज, सीवान-841226
- दयाशंकर तिवारी/8, गायत्री भवन, मकान नं॰ 297, भीटी, मऊ - 275101 (उ॰ प्र॰)
- नागेन्द्र प्रसाद सिंह/13, 1 शेफाली एपार्टमेन्ट, डॉ. ए. के. सेन पथ, पटना-800004
- पाण्डेय कपिल/5, मार्ग-3, इन्द्रपुरी, पटना-800024
- पाण्डेय सुरेन्द्र/5, सी-2/एम-81, सेक्टर बी, सीतापुर रोड योजना, लखनऊ-226020
- पी॰ चन्द्रविनोद/10, न्यू एफ/11, हैदराबाद कॉलोनी, बी॰ एच॰ यू॰ परिसर, वाराणसी-221005
- बरमेश्वर सिंह/7, ग्रा॰+पो॰-धनडीहाँ, भोजपुर 802760
- डॉ.ब्रजभूषण मिश्र/11, काँटी थर्मल पावर स्टेशन, मुजफ्फरपुर
- भगवती प्रसाद द्विवेदी/7, पो॰ बॉ॰ - 115, पटना-800 001
- मनोज कुमार सिंह 'भावुक'/कवर पृष्ठ-3, पी॰ पी॰ एल होस्टल, महाड, रायगढ़ (महाराष्ट्र)
- मिथिलेश गहमरी/6, ग्राम+पोस्ट- गहमर, जिला- गाजीपुर-232327
- रघुनाथ प्रसाद 'विकल'/10, 9,किदवईपुरी, पटना-800001
- रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष'/9, शंकर भवन, सिविल लाइन्स, बक्सर
- रिपुंजय निशान्त/8, एडवोकेट, रामराज चौक, छपरा - 841301
- शम्भुनाथ उपाध्याय/12, तिखमपुर, बलिया (उ॰ प्र॰)
- डॉ. शम्भुशरण/11, एन-14 प्रोफेसर कालोनी, चित्रगुप्तनगर, पटना-800020
- शारदानन्द प्रसाद/10, श्री बाबूलाल चौधरी का मकान, पश्चिमी शिवपुरी, पटना-800023
- शिवपूजन लाल विद्यार्थी/7, प्रकाशपुरी, आरा-802301
- सतीश प्रसाद सिन्हा/11, कल्याण विहार, अम्बेदकर पथ, बेली रोड, पटना - 800014
- डॉ. सविता सौरभ/12, 59 टीचर्स फ्लैट, त्यागराज कॉलोनी, बी॰ एच॰ यू॰, वाराणसी-221005
- सूर्यदव पाठक 'पराग'/8, अध्यापक, उच्च विद्यालय, मढ़ौरा (सारण)
- श्रीराम सिंह 'उदय'/12, बाँसडीह, बलिया - 277202
- हरिकिशोर पाण्डेय/5, आदर्श कॉलोनी, श्यामचक, छपरा
- हीरालाल 'हीरा'/11, भारतीय स्टेट बैंक, कृषि विकास शाखा, बलिया (उ॰ प्र॰)

'भोजपुरी साहित्य प्रतिष्ठान', बोरिंग कैनाल रोड, पटना-1 के ओर से स्वत्वाधिकारी जगन्नाथ द्वारा अनुकृति, बोरिंग कैनाल रोड, पटना-1 से कम्पोज्ड आ न्यू प्रिन्ट लाइन प्रेस, गाँधी नगर, पटना-1 में मुद्रित। सम्पादक : जगन्नाथ